स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की भूमिका

श्याम मूर्ति भारती
(नेट – यू० जी० सी०)
(पी०–एच० डी० – ल० ना० मिथिला विष्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)
इतिहास

विषय प्रवेषः

औपनिवेषिक सत्ता के विरूद्ध बिहार की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष की शुरूआत 1917 से मानी जाती है, जब गाँधी जी ने चम्पारण से भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह शुरू किया। गाँधी जी का चम्पारण आगमन मुरली भरहरवा ग्राम के निवासी श्री राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर हुआ था। चम्पारण के किसान अंग्रेजों द्वारा करवायी जा रही नील की खेती के अन्तर्गत तीनकठिया प्रथा से प्रतारित थे। इस प्रथा के अन्तर्गत किसानों को अपनी जमीन के 3/20 भाग में नील की खेती अनिवार्य रूप से करनी पड़ती थी। नील के खेती से भूमि की उर्वरता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था, किन्तु अंग्रेजो की दमनकारी नीति में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही थी।

लखनऊ के काँग्रेस अधिवेशन में जब राजकुमार शुक्ल ने गाँधी जी को किसानों की दुर्दषा के बारे में बताया तो गाँधी जी चम्पारण आने हेतु राजी हो गए। गाँधी जी के चम्पारण आगमन से किसानों में उत्साह भर गया। उन्हें लगने लगा कि अब उनकी समस्याओं का निदान संभव है, क्योंकि गाँधी जी अंग्रेजों से करों के रूप में ली गई राशि के 25% हिस्सा वापस करवाने में सफल रहे। गाँधी जी का यह कदम न सिर्फ किसानों के मनोबल को बढ़ाया बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन में एक मील का पत्थर साबित हुआ, क्योंकि पहली बार भारत में गाँधी जी के रूप में किसी ने अंग्रेजी सरकार के आदेशों की अवहेलना की थी। पहली बार इस सत्याग्रह के दौरान अंग्रेजों द्वारा करों के रूप में ली गई राशि वापस दी गई। गाँधी जी के इस कदम ने भारतीयों के समक्ष यह उदाहरण प्रस्तुत कर दिया कि ब्रिटिश शासन का विरोध भी अहिंसात्मक रूप से संभव है।

राष्ट्रीय स्तर पर पूरे भारत में इस समय अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध जागृति शुरू हो चुकी थी। बिहार में भी इस जागृति का व्यापक प्रभाव पड़ा। तथा बिहार के शिक्षित वर्गों द्वारा पृथक बिहार राज्य हेतु माँग की जाने लगी। इस माँग हेतु सर्वप्रथम प्रयास बिहार टाइम्स नामक पत्रिका द्वारा शुरू किया गया। 1905 ई० में हुए बंगाल विभाजन के विरूद्ध स्वदेशी आंदोलन का बिहार में भी प्रभाव देखने को मिला। बिहार के नवयुवकों ने स्वदेशी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1908 ई० में खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी द्वारा मुजफ्फरपुर के अंग्रेज जिला जज किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास इसका ज्वलन्त उदाहरण है। बाद में प्रफुल्ल चाकी ने खुद को गोली मार ली तथा 11 अगस्त 1908 को खुदीराम बोस को फाँसी दे दी गई।

बिहार राज्य में बुद्धिजीवियों की माँग तथा बिहारी अस्मिता को ध्यान में रखते हुए 1 अप्रैल 1912 को बिहार अलग प्रांत के रूप में अस्तित्व में आया। किन्तु इससे औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध आक्रोश कम नहीं हुआ। 1916 ई० में स्थापित होमरूल आंदोलन का बिहार में भी प्रभाव देखने को मिला। इस आंदोलन के क्रम में ऐनी बेसेन्ट का भी बिहार आगमन हुआ। बिहार में होमरूल आंदोलन में मौलाना मजहरूल हक, सरफराज हुसैन खाँ, पूर्णेन्दु नारायण सिंह तथा वैद्यनाथ नारायण सिंह आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पटना, राँची, दुमका तथा देवघर (वर्तमान झारखंड राज्य) आदि में क्रांतिकारी संगठनों की स्थापना हुई।

अंग्रेजी सत्ता के विरोध में जनजातियों ने महती भूमिका निभायी। तत्कालीन बिहार में जनजातीय असंतोष ताना भगत आंदोलन, संथाल विद्रोह, मुंडा विद्रोह आदि के रूप में देखने को मिला। इस जनजातीय आंदोलनों में ताना भगत आंदोलन ऐसा आंदोलन था, जो काँग्रेस एवं गाँधीजी के सिद्धांतो पर आधारित था। ताना भगत आंदोलन 1913–14 ई० में एक स्थानीय आंदोलन के रूप में जात्रा भगत के नेतृत्व में शुरू किया गया था। जनजातीय लोग दिकुओं (बाहरी लोगों हेतु प्रयुक्त नाम), जमींदारों तथा प्रषासन की गतिविधियों का विरोध कर रहे थे। साथ ही ईसाई धर्म को भी अपना विरोधी मानते थे। ताना भगत आंदोलन से जुड़े लोगों ने संवैधानिक रूप से गतिविधियां चलाते हुए स्वतंत्रता का अधिकार, लगान से मुक्ति तथा समानता का अधिकार आदि की माँगे रखी।

वन एवं वन संपत्तियों पर पारंपरिक रूप से जनजातियों का अधिकार रहा है, किन्तु अंग्रेजो के आगमन के पष्चात जनजातियों से वनाधिकार छीने जाने से वे क्षुब्ध थे, तथा आर्थिक

शोषण से मुक्ति चाहते थे। इन आंदोलनकारियों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भागीदारी निभाते हुए धैर्य, साहस तथा अनुषासन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में खिलाफत आंदोलन एवं असहयोग आंदोलन महत्वपूर्ण चरण रहे हैं। प्रथम विष्वयुद्ध की समाप्ति पर जब विजयी राष्ट्रों द्वारा तुर्की के सुल्तान के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया गया तो इससे भारतीय मुसलमानों का क्रोध भड़क उठा, क्योंकि मुसलमानों के हृदय में तुर्की के सुल्तान के प्रति असीम श्रद्धा थी। इस घटना ने पूरे विष्व के मुसलमानों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। बिहार में खिलाफत आंदोलन के समर्थन में मुसलमानों की एकता सामने आयी। बिहार में खिलाफत आंदोलन 1919 में प्रारंभ हुआ तथा मौलान मजहरूल हक ने इसमें सक्रिय रूप से भागीदारी निभायी। मौलाना मोहम्मद अली तथा शौकत अली ने पूरे भारत में खिलाफत आंदोलन शुरू कर दिया। फरवरी 1919 में पटना में खिलाफत आंदोलन के समर्थन में हसन इमाम की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया तथा इसी क्रम में अप्रैल 1919 में मौलाना शौकत अली का पटना आगमन हुआ। खिलाफत आंदोलन ने हिन्दू तथा मुसलमानों के बीच एकता कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। खिलाफत आंदोलन को गाँधी जी का भी समर्थन प्राप्त था। गाँधी जी ने अंग्रेजों के विरूद्ध भारतीय लोगों में एकता कायम करने हेतु खिलाफत आंदोलन को प्रमुख अवसर के रूप में देखा।

अंग्रेजी सत्ता के विरोध के दौरान काँग्रेस को यह महसूस होने लगा कि अब संवैधानिक तरीकों से कुछ हासिल होनेवाला नहीं है। साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था की दिन प्रतिदिन खराब होती स्थिति, साधनों की कमी, सूखा, महामारी तथा प्लेग की पृष्ठभूमि में पहली अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन की शुरूआत हुई। गाँधी जी ने वायसराय को एक नोटिस देकर लिखा कि ''कुषासन करनेवाले शासक को सहयोग देने से इन्कार करने का अधिकार हर आदमी को है।'' सितंबर के कलकत्ता अधिवेषन में काँग्रेस द्वारा असहयोग आंदोलन के शुरू होते ही बिहार में व्यापक पैमाने पर इस आंदोलन का समर्थन शुरू हो गया। यद्यपि काँग्रेस द्वारा औपचारिक रूप से इस आंदोलन का प्रारूप पूर्ण रूप से शुरू हो गया था। ब्रिटिष सरकार द्वारा पारित रॉलेट एक्ट को काले कानून की संज्ञा दी गई तथा इसके खिलाफ पहली बार गाँधी जी द्वारा पूरे देष में सत्याग्रह चलाने का फैसला किया गया। बिहार के लोगों द्वारा 6 अप्रैल 1919 को हड़ताल का आयोजन किया गया। बिहार में छपरा, मुजफ्फरपुर, गया, मुंगेर एवं झरिया (वर्तमान झारखंड राज्य) में हड़ताल का व्यापक असर पड़ा। बिहार मे गाँधी जी की गिरफ्तारी का विरोध किया गया। 1920 ई० में भागलपुर में हुई

बिहार प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन में ब्रजकिषोर प्रसाद के सुझाव पर स्वराज के मुद्दे को भी असहयोग आंदोलन में मिला लिया गया।

गाँधी जी के आह्वान पर मजहरूल हक, राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिषोर प्रसाद, मोहम्मद शफी आदि नेताओं द्वारा विधायिका के चुनाव से अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली गई। वकीलों तथा छात्रों द्वारा कोर्ट एवं ब्रिटिष षिक्षण संस्थानों का बहिष्कार किया गया। असहयोग आंदोलन के दौरान विद्यार्थियों को षिक्षा देने हेतु पटना–गया मार्ग पर राष्ट्रीय महाविद्यालय की स्थापना की गई, जिसके प्राचार्य के पद पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की नियुक्ति हुई। इसी समय सदाकत आश्रम की स्थापना की गई, मजहरूल हक के मार्गदर्षन में। जिसे कालांतर में काँग्रेस मुख्यालय बनाया गया। गाँधी जी द्वारा बिहार में राष्ट्रीय विद्यालय कें प्रांगण में बिहार विद्यापीठ की स्थापना की गई। इस विद्यापीठ से सम्बन्धित विद्यालयों में प्राथमिक स्तर से मैट्रिक स्तर तक की षिक्षा दी जाने लगी।

राष्ट्रीय भावनाओं को लोगों तक पहुँचाने हेतु इस समय मजहरूल हक के निर्देषन में सदाकत आश्रम से 'दि मदरलैंड' नामक अखबार का प्रकाषन शुरू हुआ। असहयोग आंदोलन ने बिहार में राजनीतिक चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। असहयोग आंदोलन के दौरान मुजफ्फरपुर, शाहाबाद, आरा, किषनगंज, पूर्णिया आदि जिलों में व्यापक प्रभाव देखा गया। उत्तर प्रदेष के चौरा–चौरी नामक स्थान पर हुई हिंसा के कारण गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया गया। 22 दिसम्बर को ब्रिटेन के युवराज के पटना आने पर विरोध स्वरूप पटना शहर में हड़तालें हुई। 1922 ई० में बिहार के गया में काँग्रेस का अधिवेषन हुआ जिसकी अध्यक्षता सी० आर० दास ने की। 1923 ई० में बिहार में स्वराज्य दल की स्थापना हुई।

1927 ई० में इंडियन स्टेट्यूटरी कमीषन (साइमन कमीषन) का गठन किया गया, साइमन की अध्यक्षता में। जिसका उद्देष्य आगे संवैधानिक सुधार के प्रष्न पर विचार करना था। भारतीयों द्वारा इस कमीषन का विरोध किया गया। क्योंकि इस कमीषन के सभी सदस्य अंग्रेज थे। भारत में जहाँ भी इस कमीषन के लोग जाते वहाँ 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगाए जाते थे। इस कमीषन के विरोध के दौरान पुलिस की लाठी से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। बिहार में भी इस कमीषन के विरोध स्वरूप अली इमाम के निर्देषन में एक प्रारूप का गठन किया गया। तथा बिहार में 'साइमन कमीषन' का विरोध राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में किया गया। बिहार में इस कमीषन के विरोध में प्रभात फेरियाँ निकाली जाने लगीं जिसमें लोगों का नारा होता था–उठो जवानों सवेरा हुआ, साइमन भगाने

का बेरा हुआ। साइमन विरोधी आंदोलन ने बिहार के निवासियों में एक नवीन चेतना का संचार किया।

भारत में दूसरा नागरिक अवज्ञा आंदोलन 12 मार्च 1930 ई० को गाँधी जी के प्रसिद्ध दांडी मार्च के साथ प्रारंभ हुआ। इससे पूर्व दिसम्बर 1929 ई० में गाँधी जी द्वारा लाहौर काँग्रेस अधिवेषन में सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारूप पारित किया गया। लाहौर अधिवेषन की अध्यक्षता पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा की गई थी। यह अधिवेषन भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि इसी अधिवेषन में पूर्ण स्वराज्य का प्रारूप भी तैयार हुआ तथा 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाने का फैसला किया गया। 26 जनवरी 1930 ई० को बिहार में भी स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया गया। गाँधी जी द्वारा 5 अप्रैल 1930 ई० को नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया गया। 15 अप्रैल को बिहार के चम्पारण एवं सारण जिलों में नमकीन मिट्टी से नमक बनाकर नमक सत्याग्रह की शुरूआत की गई। बिहार के कई जिलों में इस आंदोलन का प्रचार–प्रसार हुआ। ब्रिटिष सरकार द्वारा इस आंदोलन के दौरान बिहार से लगभग 13 हजार लोगों को गिरफ्तार किया गया।

सविनय अवज्ञा के दौरान बिहार की महिलाओं ने भी ब्रिटिष विरोधी आंदोलन में हिस्सा लिया तथा विदेषी वस्त्रों एव शराबों की दुकानों के सामने धरना–प्रदर्षन किया। स्वदेषी प्रचार–प्रसार पर बल दिया गया। इस भावना से प्रभावित होकर छपरा जेल के कैदियों ने स्वदेषी वस्त्र उपलब्ध कराए जाने तक नंगे रहने का फैसला किया। तथा 'नंगी हड़ताल' की। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान बिहार के पटना, मुंगेर, चम्पारण, शाहाबाद एवं सारण आदि जिलों में चौकीदारी कर बंद करने हेतु आंदोलन किया गया। इसी समय बिहार में बिहार काँग्रेस सोषलिस्ट पार्टी का गठन हुआ तथा 1927 ई० में पटना युवा संघ की स्थापना की गई।

1917 ई० में गाँधी जी द्वारा किसानों के हित में जो अलख जगायी गयी थी उससे किसानों के मध्य तीव्र चेतना का विकास हुआ। और इसी चेतना से प्रेरित होकर अपनी समस्याओं के निराकरण हेतु 1922–23 ई० में मुहम्मद जुबैर तथा श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में किसान सभा का आयोजन किया गया। कालांतर में स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा इस आंदोलन को नवीन दिषा देते हुए 4 मार्च 1928 ई० को औपचारिक रूप से इस आंदोलन की बुनियाद रखी गयी। सरदार वल्लभ भाई पटेल गुजरात में किसानों के समर्थन में आवाज उठा चुके थे। उन्होंने बिहार की यात्रा

कर किसानों में जोष भरने का कार्य किया। बिहार के मोकामा क्षेत्र में भी जमींदारी उन्मूलन को लेकर आवाज उठायी गयी, जिसका नेतृत्व कार्यानंद शर्मा ने किया।

बिहार में समाजवादी विचारधारा के प्रचार–प्रसार तथा किसानों, मजदूरों को संगठित करने हेतु 1934 ई० में पटना के अंजुमन इस्लामिया हॉल में बिहार सोषलिस्ट पार्टी की तात्कालिक स्थापना हुई। इसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव तथा सचिव जय प्रकाष नारायण थे। राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने हेतु 1927 ई० में मणिन्द्र राय द्वारा पटना में पटना युवक संघ की स्थापना की गई।

औपनिवेषिक सत्ता के विरूद्ध भारत में 1942 ई० में एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन का प्रारंभ हुआ, भारत छोड़ो आंदोलन के रूप में। जिसमें बिहार की सक्रिय भूमिका रही। भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत क्रिप्स मिषन की असफलता की पृष्ठभूमि में हुई थी। वर्धा (महाराष्ट्र) में काँग्रेस कार्य समिति द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया। 8 अगस्त को यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया तथा गाँधी जी ने इस आंदोलन को अपने जीवन का अंतिम आंदोलन मानते हुए करो या मरो का नारा दिया। ब्रिटिष सरकार ने इस आंदोलन का दमन करने हेतु 9 अगस्त 1942 ई० को काँग्रेस के अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर कैद कर लिया। अंग्रेजी सरकार की इस कारवाई ने भारतीयों के मन में सुलग रही आग में घी का काम किया। पूरे भारत में यह आंदोलन व्यापक रूप से फैल गया। सबसे आष्चर्य की बात इस आंदोलन के दौरान यह देखने को मिली कि आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने हेतु किसी नेता के न होते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलनकारियों का जोष कम नहीं हुआ। और वे भारत की स्वतंत्रता को ही एकमात्र लक्ष्य मान कर आगे बढ़ते रहे।

बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान राजेन्द्र प्रसाद की सक्रियता को देखते हुए 9 अगस्त 1942 ई० को उनको गिरफ्तार कर लिया गया। राजेन्द्र प्रसाद की गिरफ्तारी की खबर फैलते ही बिहार में छात्रों द्वारा राजेन्द्र प्रसाद की गिरफ्तारी का व्यापक विरोध किया गया। 11 अगस्त को सचिवालय भवन (पटना) के सामने में विधायिका की इमारत पर छात्रों द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने का प्रयास किया गया। किन्तु तत्कालीन जिलाधीष डब्ल्यु जी० आर्थर के आदेष पर पुलिस द्वारा गोली चलायी गयी जिसमें सात छात्र – उमाकान्त सिन्हा, रामानन्द सिंह, संतोष प्रसाद झा, देवीपर चौधरी, राजेन्द्र सिंह, रामगोविन्द सिंह एवं जगपति कुमार शहीद हो गए। इस नृषंस घटना के विरोध में 12 अगस्त को पटना में पूर्ण हड़ताल रही।

सरकार द्वारा किये जा रहे दमनात्मक कारवाइयों के बावजूद क्रांतिकारियों का उत्साह कम नहीं हुआ। तथा बिहार के अधिकांष भागों – दरभंगा, सारण, सोनपुर, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, पटना, देवघर (वर्तमान झारखंड) आदि क्षेत्रों में व्यापक पैमाने पर उपद्रव फैला। क्रांतिकारियों द्वारा चम्पारण में पृथक सरकार का गठन किया गया। तथा हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी एवं दरभंगा में क्रांतिकारी सरकारें गठित की गई। सीवान थाने पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के क्रम में पुलिस द्वारा फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव को गोली मार दी गई। जगलाल चौधरी द्वारा सारण में पुलिस थाने को जला दिया गया। जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय लोगों ने भी ब्रिटिष विरोध में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। जमषेदपुर में टिस्को, धनबाद एवं झरिया में मजदूरों ने हड़ताल की। सियाराम सिंह के नेतृत्व में भागलपुर में आन्दोलनकारियों द्वारा राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की गई। हजारीबाग (वर्तमान झारखंड) क्षेत्र में श्रीमती सरस्वती देवी ने पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय युवकों में अंग्रेजी हुकूमत के प्रति दिन – प्रतिदिन प्रतिषोध बढ़ता ही जा रहा था। इस प्रतिषोध की भावना को सुनियोजित दिषा देकर राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान की गई आजाद दस्ते द्वारा। क्रांतिकारियों द्वारा नेपाल के तराई के जंगलों में सम्पूर्ण देष में कार्य करने हेतु आजाद दस्ते का गठन किया गया। 9 नवंबर 1942 ई० को जयप्रकाष नारायण, रामनन्दन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ल, सूरजनारायण सिंह आदि हजारीबाग जेल (वर्तमान झारखंड) से निकल गए। तथा उन्होंनें आजाद दस्ते की पृष्ठभूमि तैयार की। बिहार हेतु एक बिहार प्रान्तीय आजाद दस्ते का गठन हुआ, जिसका नेतृत्व सूरजनारायण सिंह के जिम्मे था। जय प्रकाष नारायण के साथ डॉ० राम मनोहर लोहिया तथा श्री श्याम नन्दन सिंह ने भी सक्रिय भूमिका निभायी।

आजाद दस्ते के संगठन से जुड़े क्रान्तिकारियों ने सरकार को युद्ध में बाधा पहुँचाने हेतु तोड़–फोड़ की कारवाईयों में सक्रियता से भाग लिया। इन क्रान्तिकारियों को नेपाल के राजविलास जंगल में नित्यानन्द सिंह द्वारा प्रषिक्षण दिया जाता था। इस प्रषिक्षण के अन्तर्गत तीन तरह की कारवाइयों की षिक्षा दी जाती थी–(i) यातायात के साधनों को क्षति पहुँचाना (ii) औद्योगिक प्रतिष्ठानों को क्षति पहुँचाना तथा (iii) संचार के साधनों को नष्ट करना। इसके लिए तीन तरह के उपाय थे–(i) साधारण तोड़फोड़ के लिए हथियारों और औजारों का उपयोग करना (ii) अग्निकांड द्वारा सरकारी फाइलों को नष्ट करना (iii) कार्यालयों के विध्वंष हेतु रासायनिक पदार्थों एव बारूदों का प्रयोग। नेपाल स्थित आजाद दस्ते के संगठन के आधार पर बिहार के पूर्णिया तथा भागलपुर

आदि स्थानों पर क्रांतिकारियों ने संगठित होकर भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए जनमानस में जागृति उत्पन्न की।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बुद्ध, महावीर एवं सम्राट अषोक की भूमि बिहार, जहाँ से गाँधी जी ने भारत में अपने सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया। जब औपनिवेषिक सत्ता का शोषण बढ़ गया तो अंग्रेजों को भारत छोड़ने हेतु क्रांतिकारी आंदोलन में बिहार वासियों ने अग्रणी भूमिका निभायी।

संदर्भ स्रोतः

1. दास विषेष्वर, सिंह राकेष बहादुर, मिश्रा विजय कुमार, (2007–08), बिहार : एक परिचय, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना।
2. अहमद इम्तयाज, अहसन कमर (2016), बिहार : एक परिचय, नेषनल पब्लिकेषन्स, पटना।
3. प्रसाद रमेष, (2016), बिहार इतिहास कला एवं संस्कृति, पार्वती प्रकाषन, पटना।
4. चन्द्र बिपिन, (2005), भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेषालय, दिल्ली विष्वविद्यालय।
5. ग्रोवर बी० एल०, यषपाल, (2005), आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस० चन्द एण्ड कम्पनी लि०, नई दिल्ली।
6. कर्ण डॉ० विनय, (2017), बिहार सामान्य ज्ञान, लूसेंट पब्लिकेषन्स, पटना।
7. मोहन सौमित्र, (2018), बिहार एक परिचय, मैक ग्रॉ हिल्स एजुकेषन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई।
8. राय विजय कुमार, (2018), बिहार एक अवलोकन, विवास पॅनोरमा प्रकाषन, दिल्ली।